THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

पहले परमेश्वर के साम्राज्य और परमेश्वर क्या चाहता है,
की इच्छा करो। तब तुम्हारी बाकी सभी जरूरतें भी पूरी होंगी।
–मत्ती 6:33 न्यू सैंचुरी वर्शन

साम्राज्य में नौकरी प्राप्त करना
Getting a job in the kingdom

Author – Marjorie Kehe

Christian Science Sentinel Volume 115, No. 09, March 4, 2013

जिस ग्रीष्म ऋतु में मैं 15 वर्ष की हुई, मैंने फैसला किया कि मुझे एक 'आया की नौकरी' की जरूरत थी। मेरे स्कूल की बहुत सी लड़कियों को ऐसी नौकरियाँ मिल गई थी, अवकाश में न्यूयार्क के धनी परिवार के साथ रह कर सहायक का कार्य। यह ग्रीष्म के कुछ दिलचस्प करने का तथा शायद कुछ सम्मोहक करने का अवसर प्रतीत हो रहा था। इसलिए हम सब ने आवेदन दिया, और एक–एक कर के, मेरी सहेलियों को नौकरी मिल गई। परन्तु मुझे नही।

मैं बहुत ज्यादा निराश हो गई थी।

मेरी माँ ने सुझाव दिया कि मुझे एक क्रिश्चियन साँयस उपचारक से बात करनी चाहिए। इसलिए मैंने कर ली।

मैंने उपचारक को अपनी कहानी बताई और उसने मेरा ध्यान क्रिश्चियन साँयस हिमनल के भजन 148 (Anna L. waring) की तरफ केन्द्रित किया। "स्वर्गिक प्रेम में वास करते हुए," भजन शुरू होता है। आगे, यह जारी रहता है: "जहाँ भी वह* मेरा मार्गदर्शन करेगा,/कोई भी जरूरत मुझे वापिस नहीं मोड़ेगी।"

उपचार ने मुझे कुछ आध्यात्मिक तथ्य भी याद दिलाए जो मैं अपने क्रिश्चियन साँयस सण्डे स्कूल की कक्षा में सीख रही थी: कि मैं एक आध्यात्मिक विचार थी, परमेश्वर को प्रिय तथा हर तरह से पूर्ण और कि मेरे निवास की असली जगह न तो मेरे माता पिता का घर था न हीं छुट्टियाँ मनाने वाला कोई अन्य घर, अपितु वास्तव में स्वर्ग का साम्राज्य था। और कि वहाँ मैं विश्वास कर सकती थी कि मेरे पास सब कुछ अच्छा होगा जिसकी मुझे हर पल जरूरत होगी।

मैंने विश्वास किया। वस्तुतः उपचारक के शब्द मुझे इतने स्पष्ट तथा तर्क सगंत प्रतीत हुए कि उसके साथ मुलाकात करने के बाद मैंने अपनी सारी चिन्ता पीछे छोड़ दी। जब भी ग्रीष्म ऋतु की योजनाओं की सोच बनी, मैंने केवल शांतिपूर्वक अपने आप को याद दिलाया कि मैं स्वर्ग के साम्राज्य में निवास कर रही थी और उस अच्छाई से कभी भी अलग नहीं हो सकती थी जो परमेश्वर से आती है–चाहे मेरे पास नौकरी थी या नहीं।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

अंततः जून आ गया, स्कूल के आखिरी सप्ताह से पहले। मुझे इस फोन–कॉल ने आश्चर्यचकित कर दिया। एक परिवार जो अब भी एक आया ढूढ़ रहा था मुझसे मिलना चाहता था। मेरी सहेलियों को शक हुआ। ''कोई भी अच्छा परिवार जून तक ढूढ़ नहीं रहा होगा,'' उन्होंनें मुझसे कहा।

परन्तु मैंने एक बार प्रयत्न करने का निर्णय लिया। अगले सोमवार, स्कूल के बाद, मेरी माँ मुझे उनसे मिलने के लिए गाड़ी में मेनहेटन ले गई। यह एक अविश्वसनी गर्म दिन था और ट्रैफिक भी हद से ज्यादा था।

हम, बिल्कुल ठीक समय में, एक भव्य अपार्टमैंट बिल्डिंग पहुँचे जहाँ पर दो द्वारपाल कार्यरत थे। हम ने उन्हें उस परिवार का नाम बताया जिनके साथ हमारी मुलाकात थी और उन्होंने न में अपने सिर हिलाए।

''वे आज शहर से बाहर हैं'', उन्होंने हमें बताया।

हमने कहा हम इस व्यवस्था के बारे में निश्चित थे, उन्होंने कहा अगर हम चाहें तो हम लॉबी में बैठ सकते थे और इतंजार कर सकते थे। हम ने निर्णय लिया कि हम एक घंटा यह देखने के लिए इंतजार करेंगे कि वह वापिस आते हैं, चाहे यह अब ठीक नहीं लग रहा था।

''तुम शायद इस ग्रीष्म ऋतु में नौकरी न प्राप्त हो,'' मेरी माँ ने बैठते हुए कहा। क्या तुम्हें यह ठीक लग रहा है?''

उपचारक के साथ बात करने के बाद जो दृढ़ता मुझ में आई थी, वह इतनी सुनिश्चित थी कि इस प्रश्न ने मुझे हैरत में डाल दिया।

''माँ, मैंने आप को बताया था जो उपचारक ने कहा था,'' मैंने उत्तर दिया। ''मैं स्वर्ग के साम्राज्य में निवास करती हूँ। मेरे पास वह सब कुछ है जो मेरे लिए सही है।''

''निःसंदेह।'' मेरी माँ सहमत हुई। और फिर हमने एक घंटे की मजेदार बातचीत का आनंद उठाया। अतः हमने द्वारपाल को अलविदा कहा और चले गए।

बाद में उसी शाम, उस परिवार ने फोन किया। उन्हें हमारे मुलाकात के दिन के बारे में गलतफहमी हो गई और उन्हें बहुत बुरा लग रहा था। हमने एक और तारीख तय की, और एक छोटे से इंटरव्यू के बाद मुझे नौकरी मिल गई।

यह नौकरी, पूरी तरह, एक हीरे की तरह साबित हुई। वह परिवार अद्भुत था। हमने इकट्ठे समुद्रतट पर एक बहुत आनंद दायक ग्रीष्मऋतु बिताई और एक मित्रता स्थापित की जो कि सर्दियों तक चली–मेरे लिए एक और प्यारी सी सौगात।

परन्तु यहाँ पर इस कहानी में एक और दिलचस्प मोड़ है। जब हम ने एक दूसरे को जान लिया, मैंने उस परिवार से पूछा उन्होंने नौकरी पर रखने के लिए इतनी देर क्यों लगाई। उन्होंने कहा कि असल में उन्होंने कई लड़कियों के इंटरव्यू किए थे परन्तु वह एकदम सही का इतंजार कर रहे थे।

'' उन द्वारपालों में से ही एक था जिसने हमें बताया कि वह तुम थी'', उन्होंने कहा । ''उस रात तुम्हें न मिल पाने के बाद जब हम घर आए उसने कहा, सही लड़की आज यहाँ थी'।''

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

उन्होंने उस से पूछा वह कैसे जानता था और उसने कहा, "वह और उसकी माँ वर्ष के सबसे गर्म दिन शहर में गाड़ी चला कर आए, परन्तु जब आप यहाँ पर नही थे वे नाराज नहीं हुई। और जिस ढंग से वे लॉबी में बैठ कर बातें कर रही थी, मैं देख पाया कि उन्हें एक साथ होना अच्छा लगता था। उनमें सच्चा प्रेम था। मैंने अपने आप से कहा, यही वह लड़की है!"

इसलिए तब जब मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी असल में मैं अपना इंटरव्यू दे रही थी। मैं हैरान हुए बिना न रह सकी, चाहे, प्रेम तथा सतुंलन जिस पर द्वारपाल ने ध्यान दिया था उस चुनौती भरी दोपहर में प्रदर्शित नहीं होते अगर मैं आध्यात्मिक आत्मविश्वास से भरी हुई न होती।

मैं विश्वास कर सकती थी कि मेरे पास सब कुछ अच्छा होगा जिसकी मुझे हर पल जरूरत होगी।

एक व्यस्क होने के नाते, मैं इस अनुभव को और ज्यादा स्पष्ट देख सकी। उस समय मेरा विश्वास पूर्ण था और बल्कि बच्चे जैसा। परन्तु अब मैं देख सकती हूँ कि उपचारक के शब्दों ने मुझे मेरे अस्तित्व के बारे में कुछ साधारण परन्तु गहन सच्चाईयों की झलक देखने में सहायता की थी। जैसे मेरी बेकर ऐडी साँयस एँड हैल्थ की टू दि् स्क्रिपर्चस में कहती हैं, " शाश्वत सत्य उस सब को नष्ट करता है जो नश्वरों को त्रुटि से सीखा हुआ प्रतीत होता है और परमेश्वर के बच्चे की तरह मानव की वास्तविक विद्यमानता प्रकाश में आ जाती है" (पृष्ठ 288 – 289)।

और यही उस दिन हुआ था जिस दिन मैंने उपचारक से बात की थी। मैंने परमेश्वर के एक बच्चे की तरह अपनी सच्ची पहचान को अधिक स्पष्टता से देखा और उस समझ ने उस झूठ को नष्ट करने में सहायता की कि मैं एक नश्वर थी, अच्छाई के सीमित अवसरों के साथ। तब मैं उन आशीषों को देख सकी जो पहले से ही मेरे थे। यही मुझे इस उपचार के बारे में विशेष रूप से सुंदर प्रतीत होता है : नौकरी मिलने से भी पहले। मैंने पूर्ण आत्मविश्वास की एक समझ में आंनद मनाया था। भजन 148 के शब्द एक तरह से इस सब का समावेषण कर देते है : " फिर भी परमेश्वर मेरे इर्दगिर्द है/और क्या मैं निराश हो सकती हूँ?"

Translation © 2014 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.